International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 11, Nov 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राँची जगन्नाथ रथयात्रा : एक सामाजिक सांस्कृतिक विरासत

सुमन बर्मन, शोध छात्रा
इतिहास विभाग, राँची विश्वविद्यालय

सारांशः–

राँची जगन्नाथ मंदिर न सिर्फ ऐतिहासिक धार्मिक स्थल है बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक केंद्र भी है, मंदिर निर्माण के द्वारा एनीनाथ शाहदेव ने लोगों को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया। प्रतिवर्ष होने वाला रथयात्रा इसका एक जीता जागता उदाहरण है। इस रथयात्रा में हर वर्ग के लोग बड़े ही उत्साह के साथ भाग लेते हैं रथयात्रा के दौरान लगने वाले नौ दिवसीय मेले में दूर–दूर से लोग आते हैं, चाहे वह व्यापारी वर्ग के रुप में हो या आम श्रद्धालु के रूप में, सभी का योगदान इस मेले के अवसर पर महत्वपूर्ण माना जाता है, जो झारखंड की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। चाहे वह मंदिर के दैनिक पूजा पाठ की व्यवस्था हो या रथयात्रा से जुड़ी व्यवस्था को संभालना हो, सभी का योगदान महत्वपूर्ण है। मंदिर से जुड़े कार्यों में भी इन सभों की भागीदारी देखी जा सकती है जो झारखंड की सामाजिक, सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है और राँची का यह मेला अपने 332 वर्षों के इतिहास को समेटे हुए है।

कुंजी शब्द– सांस्कृतिक, सामाजिक, विरासत, एकता, रथयात्रा

भूमिका : –

भारतीय राज्य झारखंड जंगलों से भरा एक समृद्ध प्रदेश है। झारखंड अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है, यहां न सिर्फ कई प्राकृतिक स्थल है बल्कि कई ऐतिहासिक धार्मिक स्थले भी है। जो पर्यटकों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है, साथ ही पर्यटन की दृष्टिकोण से भी काफी महत्वपूर्ण है। इन ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों में जगन्नाथ मंदिर का भी एक विशिष्ट स्थान है। यह मंदिर झारखंड की राजधानी राँची में अवस्थित है। यदि बात करें मंदिर के निर्माण वर्ष एवं निर्माणकर्ता की तो इस पर बी० विरोत्तम ने अपनी पुस्तक *झारखंड : इतिहास एवं संस्कृति* में लिखा है कि मंदिर का निर्माण 17 वीं शताब्दी में बड़कागढ़ रियासत के राजा ठाकुर ऐनी नाथ शहदेव ने किया था। मंदिर का निर्माण उन्होंने 1748 तदानुसार 1691 ईस्वी में किया था, जो कि वर्तमान समय से लगभग 332 वर्ष पूर्व था ।[1] इसकी पुष्टि मंदिर के अभिलेख एवं कई अन्य लेखकों की पुस्तकों से भी होती है। अनुज भुवनेश्वर *छोटानागपुर के प्राचीन स्मारक* में लिखते है कि यह मंदिर 250 फीट ऊंची पहाड़ी पर अवस्थित है।[2] मंदिर के वर्तमान सेवायीत सुधांशु नाथ शाहदेव से बातचीत से यह भी जानकारी मिलती है कि इस पहाड़ी को प्रायः नीलांचल या नीलाद्री पर्वत के नाम से भी जाना जाता है। बात करें मंदिर की स्थापत्य की तो यह मंदिर उड़ीसा का कालिंग वास्तुकला पर आधारित है और देखने पर यह मंदिर उत्कल पुरी के मंदिर को प्रतिकृति दिखाई देती है।[3] मुख्य मंदिर में प्रवेश हेतु तीन द्वारा है, जिसमें पूर्वी द्वार सबसे प्रमुख है इस द्वारा को सिंह द्वार या धर्म द्वार के नाम से भी जाना जाता है। अन्य दो द्वारों में दक्षिण द्वार जिसे अश्व द्वार एवं उत्तरी द्वारा जिसे गज द्वार के नाम से जाना जाता है।[4] मुख्य मंदिर को चार भागों में बांटा गया है जिसमे विमान या गर्भगृह, जगमोहन मंडप, नाट्य मंडप एवं भोग मंडप गर्भगृह में महाप्रभु जगन्नाथ अपने भाई बलभद्र स्वामी और बहन माता सुभद्रा के साथ एक ऊंचे रत्न सिंहासन पर आरूढ़ है।[5] गर्भगृह के सामने एक स्तंभ है, जिसे गरुड़ स्तंभ कहते हैं जिस पर भगवान विष्णु के वाहक गरुड़ देव विराजमान है, जो महाप्रभु का अभिनंदन करते दिखाई देंगे। मंदिर में मुख्य मंदिर के अलावा कई अन्य छोटे– छोटे मंदीर भी है, जिसमें बाबा विश्वनाथ मंदिर, विष्णु चरण पादुका मंदिर, श्री गणेश मंदिर एवं माता विमलेश्वरी मंदिर है माता का यह मंदिर एक शक्तिपीठ के रूप में स्थापित है। इस मंदिर के साथ–साथ भगवान विष्णु के तीसरे स्वरूप वराह देव, चौथे स्वरूप वामन देव एवं पांचवें स्वरूप नरसिंह देव मंदिर भी स्थापित की है। मुख्य मंदिर के आधे दूरी पर एक अन्य छोटी सी पहाड़ी में एक और मंदिर स्थापित है। इस मंदिर का निर्माण मुख्य मंदिर के साथ ही

1691 में ऐनीनाथ शहदेव द्वारा कराया गया था ।[6] मान्यता अनुसार यह मंदिर महाप्रभु जगन्नाथ के मौसी का घर है और इस कारण यह मंदिर मौसीबाड़ी कहलाता है। वैसे तो यह मंदिर आकार में मुख्य मंदिर की तुलना में छोटा है लेकिन इस मंदिर का महत्व मुख्य मंदिर के समान है। हर साल आयोजित होने वाला रथयात्रा के अवसर पर इस मंदिर की महत्वता और भी अधिक बढ़ जाती हैं। इस मंदिर की चर्चा *बिहार एंड उड़ीसा डिस्ट्रिक गजेटियर* में एम० जी हैलेट भी किया है।[7]

मंदिर निर्माण का उद्देश्यः–

पुरी यानी जग के नाथ जगन्नाथ का निवास स्थान है। पुरी जिसे शंख क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है।[8] पुरी को भगवान विष्णु से संबंधित है इस कारण इस क्षेत्र को पुरुषोत्तम क्षेत्र भी कहा जाता है।[9] सनातन मान्यताओं में तीर्थ का अपना ही एक विशेष महत्व है, तीर्थ मनुष्य हेतु मोक्ष का मार्ग है। इन तीर्थ में चार धाम यात्रा का विशेष महत्व है इन चार धामों में बद्रीनाथ, द्वारिका, रामेश्वरम एवं पुरी शामिल है। ऐसी मान्यता है कि श्री विष्णु जहां बद्रीनाथ में स्नान करते हैं, द्वारिका में श्रृंगार करते हैं, पूरी में भोजन ग्रहण करते हैं, तो वहीं रामेश्वर में विश्राम कहते हैं।[10] चूंकि पुरी क्षेत्र निकट था इसलिए तीर्थ के रूप में नागवंशी शासकों द्वारा पुरी की यात्रा की जाने लगी और यह यात्रा महाप्रभु के आशीर्वाद प्राप्ति के उद्देश्य से भी की जाती थी। सुधांशु जी से साक्षात्कार द्वारा यह जानकारी प्राप्त होती है कि नागवंशी शासक रामशाह के चार पुत्रों थे जिसमे से तीन पुत्रों ने पुरी तीर्थाटन करने का निर्णय लिया और अपना सारा राजपाठ अपने छोटे भाई एनीनाथ को सौंप कर चले गए। चूंकि उन दिनों यात्रा करना सुलभ नहीं था। वाहन की भी कोई व्यवस्था नहीं थी। आम लोग तीर्थातन के बारे में सोच भी नहीं सकते थे। तब एनीनाथ शाहदेव जी ने सोचा की जनउद्धार हेतु क्यों न पुरी के समान ही छोटानागपुर में जगन्नाथ मंदिर की स्थापना की जाए ताकि आम भक्तजन जो तीर्थाटन में असमर्थ है उन्हें यहीं पर चार धाम यात्रा का फल सके और तब एनीनाथ जी पुरी जाने का फैसला किया और पूरे लाव लश्गर के साथ पुरी की यात्रा हेतु निकला पड़े उनके साथ एक उरांव सेवक भी था। सेवक भगवान जगन्नाथ का प्रबल भक्त बन गया और उसने सात दिन और रात तक लगातार उपवास किया। एक सप्ताह के उपवास के बाद आधी रात के करीब उसे भूख लगी और जब सभी लोग सो रहे थे तो उसने खाना मांगा। उसने कुछ शब्द कहे कि वह भूखा है और अचानक उसने देखा कि एक आदमी उसके लिए सोने के बर्तन में खाना और पानी ला रहा है। अगली सुबह मंदिर के अधिकारियों ने पाया कि सोने का बर्तन, जो मंदिर की संपत्ति थी, बंद कमरे से गायब था। सभी ने समझा कि भगवान जगन्नाथ स्वयं उनके लिए भोजन लेकर आये हैं। अगली रात ठाकुर को सपना आया कि उन्हें जगरनाथपुर में भगवान जगन्नाथ का एक मंदिर बनवाना होगा और उनकी छवि स्थापित करनी होगी। घर लौटने पर ठाकुर ने वैसा ही किया। वहां प्रभु के दर्शन किया और वहां से आने के बाद जगन्नाथ मंदिर के निर्माण कार्य में लग गए।[11]

एक अन्य किंवदंती यह है कि ठाकुर भगवान जगन्नाथ के भक्त थे और भगवान के दर्शन के लिए अक्सर पुरी जाते थे। उनकी बग्गियों को डाकुओं द्वारा परेशान किया जा रहा था और उन्होंने मदद के लिए भगवान जगन्नाथ से प्रार्थना की। भगवान की कृपा से शत्रुओं का सफाया हो गया और इसके बाद ठाकुर ने जगरनाथपुर में मंदिर का निर्माण कराया।[12] ठाकुर एनीनाथ शहदेव ने समाज के हर वर्ग को जोड़ने का प्रयास किया और मंदिर के दैनिक कार्यक्रम एवं रथयात्रा से जुड़े विधि–विधान में समाज के सभी वर्गों के लिए कुछ जिम्मेदारियां सौंपी। जैसे कि श्री हरि जगन्नाथ को प्रत्येक दिन फूल माला की जिम्मेदारी नायक परिवार को सौंपा गया। जगन्नाथ के गहनों की सफाई का कार्य वैद्यनाथ पोद्दार परिवार को सौंपा गया, साथ ही करंज तेल देने हेतु पाहन परिवार, भोग हेतु सब्जी आपूर्ति के लिए महतो परिवार, श्री हरि को घंटी देने हेतु उरांव परिवार, महाप्रभु को विशेष अवसर पर फूल माला की जिम्मेदारी माली परिवार, मिट्टी के बर्तन हेतु प्रजापति परिवार, पूजा हेतु बड़कागढ़ के राजपुरोहित, मंदिर के सुरक्षा का कार्य शेख परिवार एवं प्रथम सेवक को परंपरागत धार्मिक नियम का पालन कार्य सौंपा गया। इसी प्रकार वार्षिक रथयात्रा के दौरान रथ पर पगड़ी बांधने का कार्य मुंडा परिवार को सौंपा गया। रथ और श्री जगन्नाथ की चित्रकारी का कार्य बढ़ई परिवार को, रथ के कपड़ा सिलाई का कार्य खलीफा परिवार, रथ के मरम्मत का कार्य सोहराय लोहार परिवार को सौंपा गया एवं श्री जगन्नाथ को रथ पर बिठाने का कार्य रजवार परिवार एवं महतो परिवार को सौंपा गया। ये जिम्मेदारियां उनके पूर्वजों को तत्कालीन शासक द्वारा दी गई जिसे आज भी उनके वंशज निभाते आए रहे है, जो सामाजिक एकता को प्रदर्शित करता है।[13] इसके साथ ही मेले

की व्यवस्था हेतु स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता एवं आदिवासी सरना विकास समिति के कार्यकर्ता भी अपना दायित्व को भली भांति निभाते आए रहे है।

रथयात्रा की परंपराः –

जगन्नाथ मंदिर से जुड़े कथा के अनुसार पुरी के जगन्नाथ मंदिर का निर्माण मालवा नरेश राजा इंद्रद्युम ने कराया था।[14] और रथ यात्रा महाप्रभु के उनके मौसी के घर प्रस्थान करने का एक अवसर है जो भक्तों के द्वारा एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है सुधांशु जी बातचीत से यह जानकारी प्राप्त होती है कि राजा इंद्रद्युम की पत्नी का नाम गुंडिचा था। जब राजा द्वारा मंदिर का निर्माण कराया गया तो इससे महाप्रभु काफी प्रसन्न हुए और उन्होंने राजा एवं रानी को वरदान मांगने को कहा। इंद्रद्युम ने वरदान स्वरुप मांगा कि वे नवल हो जाए ताकि आने वाली पीढ़ी इस मंदिर पर अपनी दावेदारी साबित न कर सके। रानी गुंडिचा ने महाप्रभु से यह वरदान मांगा कि आज के बाद आप ही मेरे पुत्र होंगे और आपको वर्ष में एक बार मेरे घर जरूर आना होगा और इस तरह महाप्रभु जगन्नाथ, भाई बलभद्र एवं बहन सुभद्रा संग तथा रथारूढ होकर अपने मौसी के घर हेतु प्रस्थान करते हैं और तब से रथ यात्रा की परंपरा की शुरुआत होती है। चूंकि राँची जगन्नाथ मंदिर भी पुरी के परंपराओं का ही अनुसरण करता है इसलिए राँची में भी प्रत्येक वर्ष आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष द्वितीया को रथ यात्रा का आयोजन बड़े ही धूमधाम एवं उत्साह के साथ किया जाता है।

रथयात्रा यात्रा पूजन विधिः –

रथ यात्रा की पूजन की शुरुआत वैशाख शुक्ल द्वितीया यानी अक्षय तृतीया के दिन से ही मानी जाती है, रथकार पूरन लोहार ने बताया के इस दिन पूरे विधि विधान से पुराने रथ की पूजा कर उसकी मरम्मत का कार्य प्रारंभ हो जाता है। और यह भी बताया कि रथ निर्माण की देखरेख की जिम्मेदारी तत्कालिक शासन द्वारा उनके पूर्वजों को सौंपी गई है। जिस जिम्मेदारी का निर्वहन आज भी वे लोग भली भांति करते हैं। जगन्नाथ मंदिर के पुजारी श्री रामेश्वर पाढ़ी से जानकारी प्राप्त होती है कि रथ यात्रा की शुरुआत से ठीक पंद्रह दिन पहले महाप्रभु जगन्नाथ के स्नान यात्रा प्रारंभ होती है जिसमें तीनों विग्रह को अश्वगंधा, सुगंधित पुष्प, हल्दी, कुमकुम आदि से स्नान कराया जाता है। ऐसा माना जाता है कि स्नान के बाद तीनों प्रभु बीमार पड़ जाते हैं और पंद्रह दिनों के लिए एकांत वास में चले जाते हैं इन पंद्रह दिनों तक मंदिर का कपाट आम लोगों के लिए बंद ही रहता है और केवल मंदिर के पूजारी द्वारा पूजा अर्चना एवं महाप्रभु का उपचार किया जाता है। तत्पश्चात पंद्रह दिनों के बाद महाप्रभु जगन्नाथ बलभद्र स्वामी और माता सुभद्रा का नेत्रदान कार्यक्रम की शुरुआत की जाती है। जिसमें मंदिर के पूजारी द्वारा वैदिक मन्त्रोंचार के साथ.. साथ तीनों विग्रहों को स्नान कराया जाता है एवं नेत्रदान की विधि पूर्ण की जाती है इस अवसर पर महाप्रभु को मालपुआ का भोग लगाया जाता जिसका निर्माण मुख्य सुपकार भुवनेश्वर महंती एवं गणेश पाड़ी की देखरेख में की जाती है।[15] इसके अगले दिन रथ यात्रा की तैयारी की जाती है। इस दिन प्रातः चार बजे इसी भक्तों का तांता मंदिर में लगा रहता है। पुरुष एवं महिलाओं हेतु अलग– अलग कतार की व्यवस्था की जाती है, तीनों विग्रहों का श्रृंगार कर रथ में बिठाया जाता है। भक्तजन बड़े ही उत्साह के साथ महाप्रभु का जय घोष करते हुए रथ को खींचकर मौसी बाडी तक ले जाते हैं।

रथ का स्वरूपः–

रथ निर्माण की शुरुआत अक्षय तृतीया से होती है रथ का निर्माण कार्य महावीर लोहार की अध्यक्षता में एवं अन्य सदस्यों में पूरन लोहार, अभिषेक लोहार, अविनाश लोहार एवं छोटू लोहार की भी भागीदारी रहती है और उनके देखरेख में ही रथ का निर्माण कार्य किया जाता है। रथ निर्माण हेतु उड़ीसा के शिल्पकार बुलाए जाते हैं इन शिल्पकारों में मुख्य प्रकाश महाराणा तथा अन्य सदस्यों में ओमप्रकाश महाराणा, बिबाधार प्रधान एवं हेमंत कुमार बड़ाईक प्रमुख है। वे पुरी के समान ही रथ का निर्माण करते है। रथ में उड़ीसा के पारंपरिक पट्ट चित्र की झलकियां देखी जा सकती है। रथ की ऊंचाई तकरीबन 35 फीट तक होती है, रथ में कुल 8 पहिए होते हैं। रथ का निर्माण हेतु नीम की लकड़ी का प्रयोग किया जाता है। रथ में रंगाई का कार्य प्राकृतिक रंगों से किया जाता है। रथ में चढ़ने हेतु जो सीढ़ियां बनी होती है वह बांस की होती है तथा रथ को खींचने के लिए जिस रस्सी का प्रयोग किया जाता है वह नारियल के रेशे से निर्मित होता

है। बात करें रथ निर्माण में कुल खर्च की तो इस खर्च की पूर्ति जगन्नाथपुर न्यास समिति की देखरेख में की जाती है।

रथ मेलाः –

जगन्नाथ रथ मेले की भव्यता देखते ही बनते हैं। रथ मेला 332 वर्षों के इतिहास को समेटे हैं, एनीनाथ द्वारा जब मंदिर का निर्माण कराया गया तब से ही पुरी के भांति राँची में भी रथयात्रा की शुरुआत हुई और इस रथ यात्रा के दौरान नौ दिवसीय मेले का आयोजन किया गया यह रथ यात्रा आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष द्वितीया से प्रारंभ होकर और एकादशी के दिन समाप्ति होती है। राँची रथ मेले की चर्चा एस० सी० भट्ट ने *द डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ झारखंड* में भी किया है।[16] इसके साथ साथ एन० कुमार ने *बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर* में रथ मेले की चर्चा कार उत्सव के रूप में किया है[17] और डी० आर० पाटिल ने *दी एंटीक्यूरियन रिमेंस इन बिहार* में भी रथ यात्रा को कार उत्सव ही कहा है।[18] राँची जगन्नाथ मेले का अपना ही एक सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। मेले की परंपरा प्रारंभ में जैसी थी वैसे आज भी बरकरार है, मेले में न सिर्फ झारखंड बल्कि बंगाल, बिहार और उड़ीसा से भी लोग आते हैं जो सांस्कृतिक विस्तार को दर्शाता है। मेले में लोहे के वस्तु, झूला, पारंपरिक व्यंजन, पारंपरिक पोशाक, पारंपरिक हथियार, पारंपरिक वाद्य यंत्र, महिलाओं हेतु श्रृंगार एवं घरेलू साज सज्जा के वस्तुएं देखी जा सकती हैं। प्रायः एक प्रकार की वस्तु एक ही स्थान पर देखने को मिलती है साथ ही मनोरंजन के भी कई साधन होते है जिसमे जादू, करतब दिखाते कलाकार, मौत का कुआं, तमाशा इत्यादि। मेले में हर छोटे बड़े उपयोगी समान भी देखे जा सकते है जो आम तौर पर रोज के दिनों में बड़ी में कम ही दिखाई देते है। मेला न सिर्फ बच्चों के लिए बल्कि स्त्री, पुरुष, बुजुर्ग सभी के लिए एक आकर्षण का केंद्र है। मेले के अवसर पर पारंपरिक लोकगीत, संगीत का एक अनोखा नजारा देखने को मिलता है। जो झारखंड के प्राचीन संस्कृति को संभाले हुए है। रथ मेला का आयोजन मंदिर ट्रस्ट के द्वारा किया जाता है।[19] यह झारखंड की संस्कृति परंपरा को आज भी बनाए रखे हुए मेले के दौरान यहां एक अनोखी बात देखने को मिलती है कि मेले के दौरान रथ यात्रा के दौरान एक झारखंड में अनोखी परंपरा देखने को मिलती है जिसे मोर सेहराय जो विशेषकर नवदंपति द्वारा किया जाता है। मेले की खास बात यह है कि पारंपरिक वाद्य यंत्र या पारंपरिक हथियार विक्रेता होते हैं, उनमें जनजातीय समुदाय की भूमिका सबसे अधिक होती है। वे वाद्य यंत्र के माध्यम से अपने प्राचीन संस्कृति और लोक परंपरा को भी दर्शाते हैं। दूसरी तरफ मेले के दौरान पूजा सामग्री के विक्रेता ज्यादातर स्थानीय ही होते हैं। रथ मेले दौरान पारंपरिक लोक संगीत के रूप भजन का आयोजन कुशवाहा कीर्तन भजन मंडली द्वारा किया जाता है, उनका कहना है कि वे इससे अपनी प्राचीन परंपरा को संभाले रखे है। इस भजन मंडली के अध्यक्ष मोतीलाल महतो तथा अन्य सदस्यों में राधिका प्रसाद महतो, कामेश्वर महतो, रमेश महतो जगनिवास महतो आदि शामिल है। राधिका प्रसाद महतो बताते हैं कि उनके पूर्वजों को यह जिम्मेवारी तात्कालिन शासन द्वारा सौंपी गई थी, जिसका पालन वह पीढ़ी दर पीढ़ी करते आए हैं और उन्हें विग्रहों को रथ पर चढ़ने एवं उतारने की जिम्मेदारियां भी सौंपी गई है। इसके साथ ही भजन गायन कर महाप्रभु की सेवा करते है। इस वर्ष सांस्कृतिक कार्य निदेशालय पर्यटन, कला संस्कृति, खेलकूद और युवा कार्य विभाग ने जगन्नाथ उत्सव का आयोजन किया जिसमें झारखंड के लोक नृत्य संगीत आदि की प्रस्तुति की गई। इन लोक कला में सरायकेला खरसावां के छऊ नृत्य, बांसुरी वादन, मॉडर्न नागपुरी नृत्य, झारखंडी लोक गीत में खोरठा गीत, खड़िया लोक नृत्य, खेरवार लोक नृत्य शामिल है। इसके कार्यक्रम के संजोयक जयकांत इंदावर ने बताया की जगन्नाथ महोत्सव का उद्देश्य झारखंड की विलुप्त होती लोक कला एवं संस्कृति को जीवंत करने की एक पहल है।[20]

समापनः –

नौ दिनों तक चलने वाला मेले की समापन हरिशयनी एकादशी के दिन होता है जिसे आमतौर पर बोल चाल की भाषा में घूरती रथ कहते है। इन नौ दिनों के दौरान भक्त जनों द्वारा मौसी बाड़ी में ही भगवान के दर्शन एवं पूजा अर्चना की जाती है। एकादशी के दिन महाप्रभु जगन्नाथ अपने भाई बहन समेत मौसी के घर से मुख्य मंदिर की ओर प्रस्थान करते हैं और इस दौरान भी भक्तों द्वारा बड़े ही उत्साह के साथ घूरती रथ यात्रा का आयोजन किया जाता है। महाप्रभु की रथ यात्रा भाई बहन के अटूट प्रेम भावना को दर्शाता है। मंदिर के पुजारियों से जानकारी मिलती है कि मंदिर की परंपरा अनुसार कहा गया है कि

महाप्रभु माता लक्ष्मी को मुख्य मंदिर में ही छोड़कर अपने भाई बहन समेत मौसी के घर चले जाते हैं जिससे माता लक्ष्मी काफी नाराज हो जाती है और रथ यात्रा के तीसरे दिन यानी पंचमी को माता लक्ष्मी गुंडिचा मंदिर पहुंचकर रथ के पहिए को तोड़ देती है और फिर मुख्य मंदिर में लौट आती है। घूरती रथ यात्रा के बाद महाप्रभु जब मुख्य मंदिर के लिए माता लक्ष्मी रोक देती है और मंदिर के भीतर प्रवेश करने नही देती है और दरवाजा बंद कर देती है महाप्रभु के बहुत मानाने के बाद माता लक्ष्मी का क्रोध शांत होता है और महाप्रभु को मंदिर के भीतर प्रवेश मिलता और इस तरह रथयात्रा का कार्यक्रम समाप्त होता है।[21]

निष्कर्षः–

जगन्नाथ मंदिर एक परिकल्पना का स्रोत है जिसको धरातल पर लाना एवं जनमानस का उद्धार करना ही मंदिर निर्माण के पीछे का उद्देश्य है। पुरी के तर्ज पर तैयार जगन्नाथ मंदिर राँची के जनमानस का आस्था का केंद्र बिंदु है। राँची जगन्नाथ मंदिर की स्थापना के पीछे का उद्देश्य झारखंड के लोगों को सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बांधना था। यूं तो जगन्नाथ मंदिर में प्रतिदिन पूजा अर्चना की जाती है परंतु प्रतिवर्ष रथयात्रा के दौरान मंदिर की प्रसिद्धि और अधिक बढ़ जाती है रथ यात्रा के दौरान दूर–दूर से लोग आते हैं और झारखंड की संस्कृति में स्वयं को ढाल लेते हैं। समाज के सभी वर्गों का योगदान रथयात्रा में महत्वपूर्ण होता है। मेले के अवसर पर हर वर्ग के लोगों का विशेष योगदान रहता है, चाहे वह जनजाति हो या सादान सभी की भूमिका अहम होती है। रथयात्रा के दौरान नौ दिनों तक आयोजित होने वाले मेले में सांस्कृतिक समावेश का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। निष्कर्षता यह कहा जा सकता है मंदिर निर्माण के पीछे एनीनाथ का को उद्देश्य था कि लोगों को चार धाम यात्रा का लाभ मिल सके और उन्हें दूर न जाना पड़े। लोगों को एकता में सूत्र में बांधना भी उसका उद्देश्य था जिसमें वह भली भांति सफल दिखाई देते हैं लोग की भागीदारी मंदिर की व्यवस्था को संभालने में तथा रथयात्रा के दौरान और अधिक बढ़ जाती है और लोग भली भांति इस जिम्मेदारियां को संभाले हुए हैं और तात्कालिक शासक द्वारा उनके पूर्वजों को जो जो जिम्मेदारी दी गई थी। उसका निर्वहन वे आज भी पीढ़ी दर पीढ़ी करते आए है और अंततः इस प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि ऐनी नाथ शहदेव द्वारा वे अपने कार्यों योगदानों के द्वारा विरासत को संभाले हुए है।

संदर्भ सूची : –

1 बी विरोत्तम, झारखंड: इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, फरवरी 2016, पृ० सं0 592

2 अनुज भुवनेश्वर, छोटानागपुर के प्राचीन स्मारक, भुवन प्रकाशन, राँची 2000, पृ० सं० 116

3 श्वेता नाथ शहदेव, झारखंड में धार्मिक पर्यटन का आर्थिक प्रभाव, इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल डेवलपमेंट एंड रिसर्च, राँची, प्रथम संस्करण 2022, पृ० सं० 40

4 के० के० पटनायक, श्री जगन्नाथ टेंपल एट पुरी आर्किटेक्चरल स्टडी, उड़ीसा रिव्यू, जून 2006, पृ० सं० 49

5 सी० बी० पटेल, श्री जगन्नाथ पुरी एंड इट्स कंजरवेशन सिनेरियो, उड़ीसा रिव्यु, अप्रैल 20005, पृ० सं० 71

6 श्वेता नाथ सहदेव, पूर्वउद्धत, पृ0 सं0 40

7 एम० जी० हैलेट, बिहार एंड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, लोगोस प्रेस, दिल्ली, पुनः प्रकाशन, 2016, पृ० सं० 249

8 जॉर्ज कार्लोस गोम्स द सिलवा, द कल्ट ऑफ जगन्नाथ, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली, पुनः प्रकाशन 2016, पृ० सं० 54

9 जॉर्ज कार्लोस गोम्स द सिलवा, वहीं, पृ० सं० 30.–31

10 सुधा शर्मा, महाप्रभु श्री जगन्नाथ चेतना एवं भक्ति संदेश, अनुराधा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृ० सं० 15

11 एन० कुमार, बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, राँची, बिहार सरकार वित्त विभाग, पटना, 1970, पृ० सं० 593

12 एन० कुमार, वहीं, पृ० सं० 593

13 श्वेता नाथ सहदेव, पूर्वउद्धृत, पृ0 सं0 83

14 जॉर्ज कार्लोस गोम्स द सिलवा,, पूर्वउद्धृत, पृ० सं० 34
15 प्रभात खबर 20–08–2023
16 एस० सी० भट्ट, द डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ झारखंड, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2016, पृ० सं0 271
17 एन0 कुमार, पूर्वउद्धृत, पृ0 सं0 594
18 डी० आर० पाटिल, दी एंटीक्यूरियन रिमेंस इन बिहार, बिहार सरकार, पटना, 1963, पृ० सं० 177
19 श्वेता नाथ सहदेव, पूर्वउद्धृत, पृ0 सं0 83
20 प्रभात खबर 24–06– 2023
21 वहीं